कांचिकामकोटिपीठम् की यात्रा

अगस्त 23 से 25 तक मैं पूज्य शंकराचार्य जी के निमन्त्रण पर कांचिकामकोटिपीठम् गया था। चेन्नई तक की यात्रा हवाई जहाज से हुई। मैं वहां सन्ध्या के सवा सात बजे पहुंचा। हवाई अड्डे पर कांची मठ के परम भक्त वयोवृद्ध श्री चिदंबरेश अय्यर हमें लेने के लिये आये हुये थे। सामान आदि निकालने में हमें पौन घण्टे का समय लगा। 8 बजे हमने कांचिपुरम् के लिये प्रस्थान किया। रात के 10 बज गये थे जब हम वहां पहुंचे। वहां होटल में हमारे रहने की व्यवस्था की गई थी पर होटल में हमें नहीं ले जाया गया और सीधे शंकराचार्य जी, श्री विजयेन्द्र सरस्वती के पास पहुंचा दिया गया। रास्ते में ही हमें श्री चिदम्बरेश अय्यर ने बता दिया था कि आजकल ग्रीस की एक राजकुमारी वहां पर आई हुई हैं वे महाराज जी की परम भक्त हैं। वर्तमान शंकराचार्य जी के पूर्ववर्ती शंकराचार्य जिन्हें परमाचार्य कहा जाता है के कहने पर उन्होंने गो सेवा का व्रत लिया था। अपने देश में वध के लिये तैयार अनेक गायों को बचा कर उन्होंने भारत में पहुंचा दिया था। जिस समय महाराज जी से हम मिलते हैं उस समय वे भी वहां उपस्थित होती हैं। महाराज जी से नाना विषयों पर सुदीर्घ चर्चा चलती है जोकि सारी की सारी संस्कृत में होती है। बीच – बीच में कभी कोई वाक्य अंग्रेज़ी के भी बोलता हूं। ग्रीक राजकुमारी के अतिरिक्त अन्य दो एक वयोवृद्ध सज्जन वहां उपस्थित रहते हैं। उनकी सुविधा के लिये, क्योंकि वे संस्कृत नहीं जानते। सारी चर्चा के दौरान राजकुमारी वहां उपस्थित रहती हैं। रात गहराती जा रही थी। यह निश्चित होता है कि दूसरे दिन, अर्थात् 24 तारीख को, प्रातः 10 बजे राजकुमारी से अलग से मिला जाय और अलग से उनसे चर्चा की जाय। राजकुमारी मठ के अतिथिगृह में ठहरी हुई हैं। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हम प्रातः 10 बजे अतिथिगृह में पहुंचते हैं और राजकुमारी से हमारी चर्चा प्रारम्भ होती है राजकुमारी का नाम है इरेने। वे आजकल लण्डन में रहती हैं। अकेली हैं विवाह नहीं किया। कभी – कभी स्वदेश में जाती हैं जब कभी कोई पारिवारिक मिलन या समारोह होता है। स्पेन की महारानी सोफिया उनकी सगी बहिन है। जब मैं उन्हें बताता हूं कि सितंबर में 27 तारीख को अमेरिका से वापिस आते समय स्पेन में लगभग एक सप्ताह मेरा रुकने का कार्यक्रम है, क्योंकि बार्सिलोना के कतिपय संस्कृतानुरागियों ने मुझे वहां निमन्त्रित किया है, तो वे बहुत प्रसन्न होती हैं। जब मैं उनसे कहता हूं कि क्या इस यात्रा में महारानी से मिलना संभव हो पायेगा, तो वे कहती हैं कि निशचित ही यदि आप मे[illegible] ... कहा कि ये कठिन नहीं है। जिन लोगों ने मुझे निमन्त्रित किया है वे ... । बार्सिलोना और मैड्रिड ... चाहिये। इतनी बात हो चुकने ... ग्लैण्ड में ग्रीस के राजदूत के ... साथ मैंने अपने परिवार के ... यूरोप के अनेक देशों में गया ... यात्रा में तो यह सम्भव नहीं ... वे निश्चित ही इसकी ... से ग्रीस में संस्कृत की ... यन कहीं नहीं होता है। ... नहीं है। केवल एक ही ग्रीक ... शताब्दी पूर्व उन्होंने ... उन्होंने किया था। वे ऐथेन्स ... का भी है। उस चित्र में ... कलकत्ता में बिताया था ... एक पुस्तक भी लिखी थी

MANUSCRIPT

यात्रा वृत्तान्त

INTOP 650 Q

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कांचिकामकोटिपीठम् की यात्रा

अगस्त 23 से 25 तक मैं पूज्य शंकराचार्य जी के निमन्त्रण पर कांचिकामकोटिपीठम् गया था। चेन्नई तक की यात्रा हवाई जहाज से हुई। मैं वहां सन्ध्या के सवा सात बजे पहुंचा। हवाई अड्डे पर कांची मठ के परम भक्त वयोवृद्ध श्री चिदंबरेश अय्यर हमें लेने के लिये आये हुये थे। सामान आदि निकालने में हमें पौन घण्टे का समय लगा। 8 बजे हमने कांचिपुरम् के लिये प्रस्थान किया। रात के 10 बज गये थे जब हम वहां पहुंचे। वहां होटल में हमारे रहने की व्यवस्था की गई थी पर होटल में हमें नहीं ले जाया गया और सीधे शंकराचार्य जी, श्री विजयेन्द्र सरस्वती के पास पहुंचा दिया गया। रास्ते में ही हमें श्री चिदम्बरेश अय्यर ने बता दिया था कि आजकल ग्रीस की एक राजकुमारी वहां पर आई हुई हैं वे महाराज जी की परम भक्त हैं। वर्तमान शंकराचार्य जी के पूर्ववर्ती शंकराचार्य जिन्हें परमाचार्य कहा जाता है के कहने पर उन्होंने गो सेवा का व्रत लिया था। अपने देश में वध के लिये तैयार अनेक गायों को बचा कर उन्होंने भारत में पहुंचा दिया था। जिस समय महाराज जी से हम मिलते हैं उस समय वे भी वहां उपस्थित होती हैं। महाराज जी से नाना विषयों पर सुदीर्घ चर्चा चलती है जोकि सारी की सारी संस्कृत में होती है। बीच – बीच में कभी कोई वाक्य अंग्रेज़ी के भी बोलता हूं। ग्रीक राजकुमारी के अतिरिक्त अन्य दो एक वयोवृद्ध सज्जन वहां उपस्थित रहते हैं। उनकी सुविधा के लिये, क्योंकि वे संस्कृत नहीं जानते। सारी चर्चा के दौरान राजकुमारी वहां उपस्थित रहती हैं। रात गहराती जा रही थी। यह निश्चित होता है कि दूसरे दिन, अर्थात् 24 तारीख को, प्रातः 10 बजे राजकुमारी से अलग से मिला जाय और अलग से उनसे चर्चा की जाय। राजकुमारी मठ के अतिथिगृह में ठहरी हुई हैं। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हम प्रातः 10 बजे अतिथिगृह में पहुंचते हैं और राजकुमारी से हमारी चर्चा प्रारम्भ होती है राजकुमारी का नाम है इरेने। वे आजकल लण्डन में रहती हैं। अकेली हैं विवाह नहीं किया। कभी – कभी स्वदेश में जाती हैं जब कभी कोई पारिवारिक मिलन या समारोह होता है। स्पेन की महारानी सोफिया उनकी सगी बहिन है। जब मैं उन्हें बताता हूं कि सितंबर में 27 तारीख को अमेरिका से वापिस आते समय स्पेन में लगभग एक सप्ताह मेरा रुकने का कार्यक्रम है, क्योंकि बार्सिलोना के कतिपय संस्कृतानुरागियों ने मुझे वहां निमन्त्रित किया है, तो वे बहुत प्रसन्न होती हैं। जब मैं उनसे कहता हूं कि क्या इस यात्रा में महारानी से मिलना संभव हो पायेगा, तो वे कहती हैं कि निश्चित ही यदि आप मेड्रिड जायें। मैंने कहा कि ये कठिन नहीं है। जिन लोगों ने मुझे निमन्त्रित किया है वे मुझे एकाध दिन के लिये मैड्रिड भी ले जा सकते हैं। बार्सिलोना और मैड्रिड तो एक ही देश में हैं। इसलिये मेरे मेजबानों को मैड्रिड पहुंचाने में कठिनाई नहीं होनी चाहिये। इतनी बात हो चुकने के बाद मैं राजकुमारी को यह बतलाता हूं कि जब मैं बैंकाक में था तब तत्कालीन थाइलैण्ड में ग्रीस के राजदूत के साथ मेरा घनिष्ट परिचय हो गया था। उन्होंने किसी प्रसंग में भारत आना था। उनके हाथ मैंने अपने परिवार के लिये कुछ चीज़ें भेजी थी जो उन्होंने पहुंचा दी थी। मैं राजकुमारी को बतलाता हूं कि मैं यूरोप के अनेक देशों में गया हूं पर ग्रीस में जाने का मुझे अवसर नहीं मिला। राजकुमारी कहती हैं कि आपकी इस यात्रा में तो यह सम्भव नहीं क्योंकि समय बहुत कम है पर अगली बार यदि समय रहते हुये उन्हें सूचना मिलती है तो वे निश्चित ही इसकी व्यवस्था कर पायेंगी। इसके बाद चर्चा संस्कृत के विषय में प्रारम्भ होती है। मैं राजकुमारी से ग्रीस में संस्कृत की स्थिति के बारे में जानना चाहता हूं। राजकुमारी बतलाती हैं कि ग्रीस में संस्कृत का अध्ययन कहीं नहीं होता है। सामान्य ग्रीस वासियों को संस्कृत का कोई ज्ञान नहीं है। उन्होंने इसके बारे में सुना भी नहीं है। केवल एक ही ग्रीक विद्वान् हैं जिन्होंने संस्कृत का अध्ययन् किया था। उनका नाम था गैलानोस। लगभग एक शताब्दी पूर्व उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता का ग्रीक में अनुवाद किया था। संस्कृत – ग्रीक कोष का निर्माण भी उन्होंने किया था। वे ऐथेन्स के रहने वाले थे और वहां के विश्वविद्यालयों में जो प्रोफेसरों के चित्र लगे हैं उनमें एक उनका भी है। उस चित्र में डा० राधाकृष्ण शैली की एक पगड़ी पहने हुये वे दिखाये गये हैं। बहुत सा समय उन्होंने कलकत्ता में बिताया था और वहां उनके अनेक मित्र थे। बनारस में उन्हें दफनाया गया था। उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी थी **'Introduction to Sanskrit Language'** जिसे सन् 2003 में इण्डो – हैलिनिक एसोशियेशन आफ़

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कल्चर एण्ड डेव्लपमेण्ट ने प्रकाशित किया था। स्पेन की वैलाडोलिड विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति का एक विभाग है। बातचीत की समाप्ति पर राजकुमारी ने कहा कि वे मुझसे लगातार सम्पर्क बनाना चाहेंगी क्योंकि उनके मन में अनेक योजनाएं हैं जिनके लिये उन्हें मेरे सहयोग की आवश्यकता होगी। मैं उन्हें आश्वस्त करता हूं कि मेरा सहयोग सदैव उनके लिये उपलब्ध रहेगा। वे कहती हैं कि ये सम्बन्धों का प्रारम्भ है अंत नहीं। यही शब्द मैं भी दोहराता हूं और हम एक दूसरे से विदा लेते हैं। एक बार और मिलने की राजकुमारी की इच्छा थी पर वह संभव न हो सका। उसी रात को राजकुमारी को लण्डन लौटना था।

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डा0 मारिया न्येजैशि की भारत यात्रा

मारिया न्येजैशि आजकल भारत की यात्रा पर हैं। दो सप्ताह उन्होंने दिल्ली में रहना था। प्रारम्भ में यही उनका विचार था पर हंगरी से पहले वे पाण्डिचेरी पहुंच गईं और वहां वाइरल ज्वर से पीडित हो गईं। स्वस्थ होते – होते उन्हें कुछ दिन लग गये और दिल्ली प्रवास के लिये केवल एक ही सप्ताह बच गया। फिर भी मेरे निमन्त्रण पर परसों, 1–09–2010 को , वे भोजनार्थ हमारे घर पधारीं। उनके साथ थे सपत्नीक डा0 इम्रे लाज़ार जोकि नई दिल्ली स्थित हंगेरियन सूचना और सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक हैं। पौने 2 बजे से लेकर सवा चार बजे तक वे हमारे साथ रहीं। अनेक विषयों पर उनके साथ सघन चर्चा हुई। उनके अपने बारे में भी हमें कुछ जानकारी मिली। जब मेरी धर्मपत्नी ने पूछा कि आपकी माताजी कैसी हैं तो उन्होंने कहा कि वे चल बसीं। 2005 में उनका स्वर्गवास हुआ, उसके 6 महीने बाद उनके पिता का स्वर्गवास हुआ और उसके 6 महीने पहले उनकी मौसी का भी स्वर्गवास हुआ। उन्होंने कहा कि इस समय मैं अकेली हूं। अपने विश्वविद्यालय के बारे में उन्होंने कहा कि वहां पैसे की कमी रही है। जब उन्होंने अपना अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया तो कुछ वर्षों तक बिना ही वेतन के कार्य किया। प्रारम्भ उन्होंने ग्रीक और लैटिन के अध्यापन से किया था फिर प्रो0 तोत्तोशि ने उनसे हिन्दी सीखने के लिये कहा क्योंकि विभाग में हिंदी पढ़ाने वाला कोई नहीं था। उन्होंने हिंदी सीखी और विभाग में प्राध्यापिका के रूप में नियुक्त हुईं। तब से उन्हें वेतन मिलना प्रारम्भ हुआ। व्यस्त वे बहुत अधिक रहती हैं। 14 घण्टे विश्वविद्यालय में पढ़ाती हैं, फिर दूतावास में हिन्दी की कक्षायें लेती हैं। प्रति बृहस्पतिवार में किसी न किसी का भाषण होता है। वहां भी वे उपस्थित रहती हैं। विभाग से हिन्दी की एक पत्रिका भी निकालती हैं, जिसका शीर्षक है 'प्रयास'। वे कहती हैं कि मैं, मेरे सहयोगी और छात्र – छात्राएं हिन्दी लिखने का प्रयास कर रहे हैं इसलिये हमने पत्रिका का नाम भी प्रयास रख दिया। उनके विभाग का नाम है– इण्डोयूरोपियन विभाग। संस्कृत का सारा का सारा दायित्व उनके विभाग के ' उनके सहयोगी चकवा डेज़ो पर है जोकि विभाग में वरिष्ठ प्राध्यापक हैं। उनके एक अन्य सहयोगी माते पूतसेश संस्कृत विषय में उनका सहयोग करते हैं यद्यपि उनका मुख्य विषय भारोपीय भाषा शास्त्र है। वे लैटिन, ग्रीक और संस्कृत वाङ्मय इतिहास का अध्यापन भी करते हैं और साथ में वेदों का भी। मुख्यतया वे एक भाषाशास्त्री हैं। स्थायी पदों पर विभाग में केवल इतने ही लोग हैं। हिन्दी पढ़ाने के लिये समय – समय पर भारत की ओर से अतिथि प्राध्यापक भेजे जाते हैं। वर्तमान में हिन्दी प्राध्यापक हैं डा0 सर्वप्रकाश गुप्त जोकि केन्द्रीय हिन्दी संस्थान दिल्ली से वहां गये हैं। इनके पूर्व के अतिथि प्राध्यापक थे असगर वजाहत, लक्ष्मण सिंह बिष्ट और प्रमोद कुमार शर्मा। फरवरी 2007 में भारत सरकार ने टैगोर फैलोशिप की स्थापना की थी जिसके अन्तर्गत एक युवा हंगेरियन विद्वान् को भारतीय विद्या क्षेत्र में विशेष अध्ययन की सुविधा दी जाती है। फैलोशिप की अवधि 3 वर्ष की होती है। पहले टैगोर फैलो गेर्गेय हिदेश थे। दूसरे टैगोर फैलो हैं चाबा किस्स। सुना जा रहा है कि 6 वर्षों के बाद भारतीय सांस्कृतिक परिषद् इस फैलोशिप को बन्द करने जा रही है। डा0 न्येजेशि, डा0 प्रमोद कुमार शर्मा की बहुत प्रशंसा कर रही थीं। उनके अनुसार ऐसे अच्छे अध्यापक विरले ही होते हैं। डा0 न्येजैशि ने बताया कि हंगरी के चार विद्वानों ने आक्सफोर्ड से संस्कृत में पी– एच0 डी0 की है। उनके नाम हैं –

तोर्जोक यूडिथ – ये सम्प्रति फ्रांस में हैं और यूनिवर्सिटी ऑफ लेले में काम कर रहे हैं।

2– चाबा वैजो –

संस्कृत में वरिष्ठ प्रवक्ता एत्वौश लौरेण्ड विश्वविद्यालय, बुडोपेश्त, इन्होंने जयन्त भट्ट के एक ग्रंथ का संपादन किया है।

3– गेर्गेय हिडाश –

ये पहले टैगोर फैलो थे। अब इन्हें पोस्ट– डाक्टोरल स्टडीज़ के लिये छात्रवृत्ति मिली है। इन्होंने एक बौद्ध पंचरक्षा ग्रन्थ पर काम किया है।

4– चाबा किस्स–

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ये दूसरे टैगोर फेलो हैं। ये एक योग के ग्रन्थ पर कार्य कर रहे हैं।

एक युवा विद्वान् आक्सफोर्ड में पी– एच0 डी0 कर रहे हैं। उनका नाम है पेतैर सान्तो। ये पी– एच0 डी0 के साथ – साथ तिब्बती भाषा का भी अध्ययन कर रहे हैं। एक विद्वान् तनीयेल बलोग हमारे विश्वविद्यालय एल्वैश लोरेण्ड विश्वविद्यालय में पी– एच0 डी0 कर रहे हैं। उन्होंने क्ले पुस्तकालयों के अन्तर्गत मालविकाग्निमित्र का लैटिन में अनुवाद किया है। डा0 न्येजैशि यह बताती हैं कि अमेरिका में क्ले नाम के एक व्यापारी थे। उनकी साहित्य में भी अभिरुचि थी, उन्होंने एक ग्रन्थमाला का प्रकाशन प्रारम्भ किया जिनमें विभिन्न भाषाओं पर लैटिन में अनुवाद रहता था। इस ग्रन्थमाला में 50 ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है। वर्तमान में इसके मुख्य सम्पादक हैं अमेरिका के सुप्रसिद्ध विद्वान् शेल्डौन पोलक्।

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्व का सबसे छोटा नगर - दुर्बी

प्रो० सत्यव्रत

यह एक संयोग ही कहा जायगा कि गत पांच छ: वर्षों से मैं निरन्तर योरुप आता रहा हूं। हर बार की यात्रा में मैंने यहां के नये-नये स्थान देखे। यही इस बार भी हुआ। कुछ स्थान इस प्रकार के थे जिनकी स्मृति मुझे आजीवन रहेगी।

इस बार के प्रवास का पर्याप्त भाग मेरा बेल्जियम में बीता। प्रति सप्ताहान्त मैं अपने वहां के सहयोगियों के साथ किसी न किसी नये स्थान को देखने निकल जाता था। इसी तरह के एक सप्ताहान्त में मुझे एक ऐसे `नगर` को देखने का अवसर प्राप्त हुआ जिसे विश्व का सबसे छोटा नगर कहा जाता है। बेल्जियम के आर्देन्स नामक पहाड़ी क्षेत्र में बसा ३७० लोगों की आबादी का दुर्बी नामक यह नगर पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण स्थल है। दिनभर यहां कारों और टूरिस्ट बसों का तांता लगा रहता है। दूर दूर से भारी संख्या में लोग इसे देखने आते हैं। बहुत चहल-पहल रहती है। नगर के मध्य भाग के सभी रेस्तरां भरे रहते हैं। सन्ध्या होते ही लोग अपने अपने स्थानों को चल देते हैं। तब एक सन्नाटा छा जाता है वहां। रह जाते हैं केवल ३७० व्यक्ति जो वहां के स्थायी निवासी हैं।

१३३१ ई० में ही इस छोटे से स्थान को सरकार की ओर से नगर का पद दे दिया गया था। तभी यह `नगर` ही कहलाता चला आ रहा है, कभी गांव या कस्बा नहीं बना।

इसके पास ओर्थ नाम की एक नदी बहती है जो इसके आकर्षण में चार चांद लगाती है। आधुनिकता के मध्य भी इसके प्राचीन नगर ने अपनी प्राचीनता को सुरक्षित रखा है। पुरानी शैली के लकड़ी के फ्रेम में ईंटों को भर कर बनाये गये मकान तथा तंग घुमावदार गलियां इसकी अपनी विशेषता हैं।

नगर के एक ओर एक पहाड़ी पर एक बुर्ज (टावर) बना है। ५० मीटर की

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊँचाई के इस बुर्ज पर चढ़ कर पूरे नगर तथा आसपास की घाटी को देखना बहुत भला लगता है। नगर के मकानों की सलेटी रंग की छतों की आभा तब देखते ही बनती है।

'नगर' के पास ही, लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर हरे कृष्ण आन्दोलन का एक मन्दिर है। मन्दिर एक बहुत बड़े भवन में है। भवन क्या, एक छोटा सा भारत ही है वहां (अनेक कमरे हैं उसमें जिनकी साज सज्जा सर्वथा भारतीय है। मन्दिर का नाम है राधानिवास। उसमें राधा-कृष्ण तथा श्रीजगन्नाथ, श्रीबलदेव तथा सुभद्रा जी की पुरी के श्री जगन्नाथ की शैली के विग्रह प्रतिष्ठित हैं। जब हम मन्दिर में पहुंचे तो आरती हो रही था। एक वृद्ध बैल्जियमवासी सन्यासी वेष में पूजा कर रहा था। एक अन्य बैल्जियमवासी भक्त बाहर से आये एक दल को राधा-कृष्ण की पूजा का महत्व तथा श्रीकृष्ण जी की लीलाओं के विषय में डच भाषा में बता रहा था। लोग उसे बहुत ध्यान से सुन रहे थे। अपने देश से दूर अपने ही देश से सम्बद्ध इस दृश्य को देख मन प्रफुल्लित हो उठा था। नगर के अन्य आकर्षणों में विशेष उल्लेखनीय है वहां का गिर्जाघर तथा उर्सेल के रजवाड़ों का महल। नगर की सबसे ऊंची इमारत यह महल ही है। सब से पहिले दृष्टि उसी पर टिकती है।

नगर के चारों ओर एक दीवार थी जिसका पर्याप्त भाग आज भी सुरक्षित है।

आर्देन्स के सुप्रसिद्ध जंगलों में बसा यह नगर शान्ति से कुछ समय बिताने के लिए आदर्श है।

०

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Duplicate

विश्व का सबसे छोटा नगर - दुर्बी

प्रो० सत्यव्रत

यह एक संयोग ही कहा जायगा कि गत पांच छः वर्षों से मैं निरन्तर योरुप आता रहा हूं। हर बार की यात्रा में मैंने यहां के नये-नये स्थान देखे। यही इस बार भी हुआ। कुछ स्थान इस प्रकार के थे जिनकी स्मृति मुझे आजीवन रहेगी।

इस बार के प्रवास का पर्याप्त भाग मेरा बेल्जियम में बीता। प्रति सप्ताहान्त मैं अपने वहां के सहयोगियों के साथ किसी न किसी नये स्थान को देखने निकल जाता था। इसी तरह के एक सप्ताहान्त में मुझे एक ऐसे `नगर` को देखने का अवसर प्राप्त हुआ जिसे विश्व का सबसे छोटा नगर कहा जाता है। बेल्जियम के आर्देन्स नामक पहाड़ी क्षेत्र में बसा ३७० लोगों की आबादी का दुर्बी नामक यह नगर पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण स्थल है। दिनभर यहां कारों और टूरिस्ट बसों का तांता लगा रहता है। दूर दूर से भारी संख्या में लोग इसे देखने आते हैं। बहुत चहल-पहल रहती है। नगर के मध्य भाग के सभी रेस्तरां भरे रहते हैं। सन्ध्या होते ही लोग अपने अपने स्थानों को चल देते हैं। तब एक सन्नाटा छा जाता है वहां। रह जाते हैं केवल ३७० व्यक्ति जो वहां के स्थायी निवासी हैं।

१३३१ ई० में ही इस छोटे से स्थान को सरकार की ओर से नगर का पद दे दिया गया था। तभीसेयह `नगर` ही कहलाता चला आ रहा है, कभी गांव या कस्बा नहीं बना।

इसके पास ओर्थ नाम की एक नदी बहती है जो इसके आकर्षण में चार चांद लगाती है। आधुनिकता के मध्य भी इसके प्राचीन नगर ने अपनी प्राचीनता को सुरक्षित रखा है। पुरानी शैली के लकड़ी के फ्रेम में ईंटों को भर कर बनाये गये मकान तथा तंग घुमावदार गलियां इसकी अपनी विशेषता हैं।

नगर के एक ओर एक पहाड़ी पर एक बुर्ज (टावर) बना है। ५० मीटर की

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊँचाई के इस बुर्ज पर चढ़ कर पूरे नगर तथा आसपास की घाटी को देखना बहुत भला लगता है। नगर के मकानों की सलेटी रंग की छतों की आभा तब देखते ही बनती है।

'नगर' के पास ही, लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर हरे कृष्ण आन्दोलन का एक मन्दिर है। मन्दिर एक बहुत बड़े भवन में है। भवन क्या, एक छोटा सा भारत ही है वहां। अनेक कमरे में हैं उसमें जिनकी साज सज्जा सर्वथा भारतीय है। मन्दिर का नाम है राधानिवास। उसमें राधा-कृष्ण तथा श्रीजगन्नाथ, श्रीबलदेव तथा सुभद्रा जी की पुरी के श्री जगन्नाथ की शैली के विग्रह प्रतिष्ठित हैं। जब हम मन्दिर में पहुंचे तो आरती हो रही थी। एक वृद्ध बैल्जियमवासी सन्यासी वेष में पूजा कर रहा था। एक अन्य बैल्जियमवासी भक्त बाहर से आये एक दल को राधा-कृष्ण की पूजा का महत्व तथा श्रीकृष्ण जी की लीलाओं के विषय में डच भाषा में बता रहा था। लोग उसे बहुत ध्यान से सुन रहे थे। अपने देश से दूर अपने ही देश से सम्बद्ध इस दृश्य को देख मन प्रफुल्लित हो उठा था। नगर के अन्य आकर्षणों में विशेष उल्लेखनीय है वहां का गिरजाघर तथा उसैल के रजवाड़ों का महल। नगर की सबसे ऊंची इमारत यह महल ही है। सब से पहिले दृष्टि उसी पर टिकती है।

नगर के चारों ओर एक दीवार थी जिसका पर्याप्त भाग आज भी सुरक्षित है।

आर्देन्स के सुप्रसिद्ध जंगलों में बसा यह नगर शान्ति से कुछ समय बिताने के लिए आदर्श है।

०

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जापानयात्रावृत्तम्

सत्यव्रतशास्त्री

पुरीस्थश्रीजगन्नाथसंस्कृतविश्वविद्यालयकुलपतिः

गतवर्षेऽगस्त्यमासस्यैकत्रिंशादिदिनादारभ्य सिताम्बरमासस्य सप्तमं दिनं यावज्जापानदेशेऽफ्रीकाभूखण्डस्योत्तरभागे एशियाभूखण्डे चैकत्रिंशमन्ताराष्ट्रियं मानवविज्ञानसम्मेलनं समपद्यत । अगस्त्यमासस्यैकत्रिंशादिदिनात्सिताम्बरमासस्य तृतीयं दिनं यावदिदं तोक्योनगरे सिताम्बरमासस्य चतुर्थादिदिवसादासप्तमं दिवसं चेदं क्योतोनगरे प्रावर्तत । तत्राहं निमन्त्रितः सम्मेलनाधिकृतैरिति जापानदेशयात्रावसरो मया लब्धः । नेयमासीन्ममेदम्प्रथमा यात्रा तस्मिन् देशे । इतः पूर्वमपि द्विर्मया तत्र गतम् । प्रथममष्टसप्तत्युत्तरैकोनविंशतिशततमे ख्रिष्टाब्दे नवाम्बरे मास्यमेरिकातो बैंकाकनगरं प्रति प्रत्यावर्तनकाले यस्मिन्नगरे मया वर्षद्वयं यावदभ्यागताचार्यत्वेनाध्यापितं द्वितीयं पुनरशीत्युत्तरैकोनविंशतिशततमे वत्सरे सिताम्बरे मासि यदा जापानीयया "सेकाई क्यू साई क्यो" इति संस्थया सपत्नीको दशदिनीययात्रार्थमहं निमन्त्रितः । यात्रात्रयप्रसङ्गेन पर्याप्तमवलोकितं मया जापानदेशस्य । अष्टषष्टिप्रतिशतपरिमितोऽस्य भागो जलमयो वा पर्वतीयो वा केवलं द्वात्रिंशत्प्रतिशतपरिमित एवावासार्हो यत्र जनानां निवासः कृष्यादिकमुद्योगजातं वा प्रवर्तते । स्वल्पीयस्यपि स्थाने निर्वाहार्थं प्रकृतिरेव तत्रत्याञ्जनान् प्रेरयति । स्थानाभावेऽपि तत्र नासौन्दर्यं विभाव्यते । पत्रपुष्पादिभिस्तथा परिष्कुर्वन्ति जनास्तत्रत्याः स्वगृहान् यथा पूर्वं किमपि सौन्दर्यं तत्राविर्भवति । उद्याननिवेशे तु यत्प्रावीण्यं तद्देशजैरधिगतं तत्तु सर्वविदितमेव । स्वच्छता तद्देशजानां जीवनस्याभिन्नमङ्गम् । सत्यपि भूयसि जनसम्मर्दे न यत्र तत्रावकरो वा मक्षिकानिकरोऽन्यदपि वा किञ्चिदशोभनं तत्र दृष्टिपथमुपैति । तोक्योमहानगरे विंशतिलक्षोत्तरकोटिसङ्ख्यका जना निवसन्ति तथाऽपि सर्वत्र स्वच्छतैव परिलक्ष्यते ।

यातायातव्यवस्था जापानीयाऽधिकांशतोऽधोभूमिगतरेलयानाधीनैव । तादृशानां रेलयानानां तत्र यत्सत्यं जालमिव । इदम्प्रथमतया तेषु यात्रां कुर्वाणो जनो न न मुह्यति । यद्यपि सर्वं तेषु रेलविरामस्थानेषु च स्वभाषयैव निर्दिष्टं भवति तथापि गन्त्रीविरामस्थानानां स्टेशनाख्यानां नामानि आङ्लभाषयाऽपि तत्रत्यैर्निर्दिष्टानि दिङ्निर्देशाश्च चित्रद्वारकाः । तेनागन्तुकानां महत्सौविध्यं भवति । अन्यथा जापानभाषाज्ञानाभावे महत्कष्टं स्यादेव ।

पूर्वयात्राद्वयापेक्षया गतवर्षीयात्रायां मयाऽनुभूतं यदधिकतरा जनाः सम्प्रत्याङ्गलभाषाभिज्ञाः सञ्जाताः । अद्यत्वे कदाचिदधिकतरा जना भाषामिमां परिशीलयन्ति येन यत्र तत्र तादृशेन जनेन सम्पर्को भवत्येव य इमां भाषां जानाति । परस्परसंव्यवहारे तेन हेतुना पूर्ववत्काठिन्यं सम्प्रति नास्ति ।

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैद्युतयन्त्रनिर्माणे यादृशं प्रावीण्यं तद्देशजैरधिगतं नान्यदेशजैर्भूरिभिरिति सर्वे ऽपि तान् मुक्तकण्ठं प्रशंसन्ति । तत्रत्यासु विपणिषु तत्तद्वैद्युतयन्त्राणामपूर्वः कश्चन सम्भारो नयनयोरयनं याति ।

मध्येतोक्योनगरं विराजते विशालोद्यानयुतो राजप्रासादो यत्राशीति-वर्षदेशीयः सम्राट् "हीरोहितो" सपुत्रो निवसति । पूर्वं जापानदेश एतादृशो नगरनिवेशो ऽभूद् यत्प्रथमं राजप्रासादो निरमीयत तदनु च चतसृषु दिक्षु नगरं न्यवेश्यत । एवं नगरविकासक्रमेण राजप्रसादो नगरमध्यभागमाक्रम्य तिष्ठति स्म ।

विंशतिवर्षपूर्वं जापानदेशे शासनादेशेन भवनानि अधिकाधिकं पञ्चभूमिका-न्येवाभवन् । तस्मिन्देशे ऽस्ति भूकम्पस्य भूयान् प्रभावः । उग्रे भूकम्पे भवनानि धराशायीनि भवन्ति । यद्यधिकभूमिकानि तानि भवेयुस्तर्ह्यधिका सम्भावना क्षतेरित्येतदेव शासननियमे कारणमभूत् । सम्प्रति पुनर्वैज्ञानिकैस्तादृशी पद्धतिराविष्कृता यया सत्यपि भूकम्पे प्रेङ्खोलितान्येव भवन्ति भवनानि न तु पतन्ति । एतस्यैवायं परिणामो यदद्य "होटल अकासका प्रिंस" "होटल न्यू ओतानी" इत्यादीनि नाना भवनानि चत्वारिंशद्भूमिकानि जापानदेशस्य गौरवभूतानि तद्वैभवप्रख्यापकानि च नयनातिथितां यान्ति । होटल न्यू ओतानीं निकषाऽतिरमणीयमेकमुद्यानमागन्तुकानां मन आवर्जयति रम्यैः पादपैर्विराजितं लताकुञ्जैः सनाथितं तत्तत्प्रवाहिभिर्निर्झरैरनुनादितं यत्सत्यं तत्काप्यपूर्वां सुषमां बिभर्ति । तत्रैव गृहमेकमेतादृशमस्ति यत्र पर्यटकानां सुखावबोधाय जापानीयायाः परम्परागतायाश्चायनिर्माणपद्धतेः आङ्गलभाषायां "टी सेरिमनी" इत्याख्यायाः प्रदर्शनं भवति । परम्परागतं "किमोनो" इत्याख्यं वेषं धारयन्त्यो जापानीया महिलाः स्वीयं चायनिर्माणप्रकारं प्रदर्शयन्ति परिवेष-यन्ति च जापानीयं हरितचायं समुपागतेभ्यः । सर्वमपि तत्र विशिष्टया पद्धत्यैव भवति । विशेषप्रकारेण चायपात्रस्य चुल्ल्युपरिधारणं तस्य ततोऽपाकरणं विशिष्टमुद्रया हस्ते चमसधारणं "बाऊल" इत्याख्ये पात्रे चापरया विशिष्टमुद्रया चायपरिवेषणं ताभिः क्रियते । भङ्गीविशेषेण क्रियमाणं तत्सामान्यमप्यसामान्यमिव भाति ।

तोक्योनगरेऽभ्रंलिह एक स्तम्भः "टावर" अप्यस्ति लिफ्ट इत्याख्येन यानेन यमारुह्यात्युच्चैः स्थितोजनः तोक्योनगरं दूरं दूरं यावद् द्रष्टुं शक्नोति ।

दूरयात्रार्थं जापानदेशेऽतीव त्वरितगतिकानि जापानभाषायां "शिन्कान्सेन्" इत्याख्यानि आङ्गलभाषायां च "बुलेट् ट्रेन्" इत्याख्यानि रेलयानानि सन्ति । तोक्योतः क्योतोपर्यन्तं पञ्चशतदेश्यकिलोमीटरपरिमितोऽध्वा तै होरात्रयेणैवातिक्रान्तुं शक्यः । सर्वाण्यपि तानि स्वतश्चालितान्येव भवन्ति । तादृशी सुतरामद्भुता यान्त्रिकी व्यवस्था जापानीयैस्तत्कृते कृता ।

पृ-3/

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गतवर्षे यदन्ताराष्ट्रियं सम्मेलनं जापानदेशेऽभूत्तद्विचार्यविषयानुसारेण चतुर्दशसु भागेषु प्रविभक्तमासीत् । ते च प्राचीनकालिकान्यैतिहासिकानि नगराणि; प्राचीननिकटपूर्वभूभागे राज्यतन्त्राणि, सामाजिक्यो धार्मिक्यश्च परम्पराः; बौद्धसंस्कृतेर्हिन्दूसंस्कृतेश्च प्रसारस्तयोरेशियादेशेश्चाङ्गीकारः; पूर्वदक्षिणपूर्वेशियादेशेषु कन्फ्यूशियनमतस्य ताओमतस्य च प्रभावः; इस्लामे मतमतान्तराणि; आलूताइकजनानामितिहासः, संस्कृतिभाषा च; पूर्वपश्चिमभूभागयोः सांस्कृतिक आर्थिकश्च सम्बन्ध इत्येमादय आसन् । एतत्सम्मेलनावसरेऽन्ताराष्ट्रिय बौद्धाध्ययनसमाजेनापि स्वकीयं तृतीयं सम्मेलनमायोजितमासीत् । पूर्वोक्तसम्मेलनस्य तृतीयो भाग एव तत्सम्मेलनेन स्वकीयो भाग इति गृहीतः । सर्वेष्वपि भागेषु बृहत्तमोऽयमेव भागोऽभूद्यत्र सर्वाधिका निबन्धा वाचिताः । किञ्च, सम्मेलनावसरे द्वे विचारगोष्ठी, सेमिनारस्, अपि समायोजिते अभूताम् । तयोः प्रथमा भागद्वये विभक्ता । प्रथमो भाग एशियाया अफ्रीकायाश्च देशेषु अर्थव्यवस्थाध्ययनदिशः, शोधप्रक्रियां भविष्ययोजनाश्चाधिकृत्य प्रावर्तत । द्वितीयो भागश्च पुरातत्त्वदिशा समुपलब्धां नूत्नां सामग्रीमधिकृत्य प्रासरत् । द्वितीया विचारगोष्ठी जापानदेशस्य सामाजिकीः सांस्कृतिकीश्च परम्परा अधिकृत्य प्रावृतत् । एतदतिरिक्तमेकं चर्चासदः "कोलोकियम्", अपि समायोजितमभूद्यत्र पुस्तकालयान्, अभिलेखागारान्, सङ्ग्रहालयान्, प्रकाशनानि, सूचनादानप्रदानं चाधिकृत्य विद्वद्भिः प्रवर्तितो विमर्शः । सम्मेलने दिग्भ्यो विदिग्भ्यश्च प्रायो विद्वत्प्रपञ्चशती भागं गृहीतवती ।

सम्मेलनकार्यालयः सम्मेलनदिवसेषु तोक्योनगरे भव्यातिभव्ये रमणीयतमे केन्द्रस्थे "होटल अकासका प्रिंस" इत्यत्रास्त । निबन्धवाचनादि चर्चागोष्ठ्यादि च तत्समीपस्थयोः "तोबीसेन्टरहाल" - "ज़ेन्क्योरन्" - भवनयोरभवत् । क्योतोनगरे सम्मेलनं "क्योतो इण्टरनैशनलकान्फ्रैंस हाल" इत्यत्र समायोजितमभूद् यन्निकटे शष्पश्यामला भूस्सरसी पर्वतशृङ्खला च यत्सत्यं नेत्ररसायनीभूताः परां तृप्तिमानन्दं च प्रादुः । जापानदेशे एकत्र जलधिः, अपरत्र शैलशृङ्खलाः, अन्यत्र च वनराजिविराजिताः सरस्यः सौन्दर्यमपूर्वं सृजन्ति बलादाकर्षन्ति चागन्तुकानां चेतांसि । प्राकृतिकसौन्दर्यस्य वैभवजनितसौन्दर्यस्य चाद्भुतं सम्मिश्रणं जापानदेशे विभाव्यते ।

जापानीया बौद्धधर्मावलम्बिनः । तस्यैव नाना सम्प्रदायास्तत्र प्रचलिताः । वज्रयानस्य, ज़ेन (= ध्यान) बौद्धमतस्य सद्धर्मपुण्डरीकमाश्रित्य नूतनप्रवृत्तस्य रैयुकाईमतस्य च तत्र प्रचारः । तद्देशे यत्र तत्र बौद्धमन्दिराणि बौद्धविहारभूमयश्च दृष्टिपथमवतरन्ति । बौद्धधर्मेण सहैव ततः पूर्वं तत्र प्रचलितस्य शिन्तोधर्मस्याप्यव्याहतः प्रचारः परिलक्ष्यते । भव्यातिभव्यानि तदीयानि मन्दिराणि तत्र नयनयोरतिथितां यान्ति । न तेषु कस्यापि प्रतिमाविशेषस्य पूजनं भवति । सर्वेष्वपि पदार्थेषु देवत्वकल्पना शिन्तोधर्मस्य वैशिष्ट्यम् । तत्र कस्य वा पदार्थविशेषस्य देवविशेषस्य वा प्रतिमा भवितुमर्हेत् ?

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भारतवज्जापानदेशेऽपि मन्दिरबहिर्भागे जलस्य व्यवस्था भवति । हस्तप्रक्षालनं कृत्वैव जना मन्दिरेषु प्रविशन्ति । कतिपयवर्षपूर्वं जलप्रोक्षणमपि तत्रत्या अकुर्वन् । एवं शुचयो भूत्वा उपानदादि उन्मोच्य भक्तिभावेन बद्धाञ्जलयस्ते भगवन्तं तथागतं पूजयन्ति स्वेष्टदेवं वा ध्यायन्ति । अगरुवर्तिकासुगन्धसुवासितः सर्वोऽपि मन्दिरपरिवेशः सर्वान् पावयति । यत्र तत्र जनाः कपोतादीन् पक्षिणोऽन्नदानेन तर्पयन्ति पुण्यं तेनोपार्जितं भवतीति ।

सर्वथा विलक्षणोऽयं देशो जापानो नाम । एतस्मिन् प्राचीनताया नवीनतायाश्चाद्भुतं सम्मिश्रणमवलोक्यते । अत्र सन्त्येकत्र बौद्धमन्दिराणि शिन्तोमन्दिराणि च यत्र धर्मपरायणैः कृतः सद्धर्मपुण्डरीकपाठः श्रोत्रशष्कुलीषु सुधां वमति विशाला बुद्धप्रतिमाश्च नेत्रे तर्पयन्ति, अपरत्र च सन्ति गिन्ज़ासदृशा वैभवपराकाष्ठां गता वैद्युतेनालोकेन रात्रिष्वपि दिनन्त्योऽव्याहतस्त्रीपुरुषसञ्चारबहुलभूमिकाः पण्यवीथयः । तदेतत्सर्वं सर्वानपि चित्रीयापरवशान् विदधाति ।

. . .

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हरिद्वार की डायरी के पन्ने

9.4.1999 को मैं सपत्नीक श्री रामकृष्ण शर्मा के साथ मुम्बई – देहरादून एक्सप्रेस से तीन बजे अपराह्न के लगभग ज्वालापुर पहुंचा। हरिद्वार में यद्यपि श्री शर्मा जी ने स्वामी केशवानन्द जी को अपने आगमन की तारीख तथा ट्रेन की सूचना दे रखी थी तो भी कार्यक्रम का गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में होने के कारण जहां से मुझे मानद विद्यावाचस्पति की उपाधि मिलनी थी, महाविद्यालय में ही ठहरना उचित समझ वहीं रात्रि निवास किया।

10.4.1999

अभी प्रातःकालीन चायपान हो ही रहा था कि एक सज्जन धोती (~~[illegible]~~ लुंगी टाइप) कुर्ते में कमरे में आ गये। उन्होंने परिचित की तरह नमस्ते की। हमने उन्हें बैठने को कहा। उन्होंने कहा कि वे रिटायर्ड कमिश्नर हैं तथा महाविद्यालय के स्नातक हैं। नाम पूछने पर उन्होंने बताया कि वह विद्यासागर हैं क्योंकि हंसते हुए उन्होंने कहा कि उनका सब कुछ विपरीत है।

उन्होंने कहा कि महाविद्यालय में पण्डित देवीप्रसाद जी के एक व्याकरण अध्यापक हुआ करते थे। स्नातक हो जाने के कई वर्ष बाद जब श्री विद्यासागर महाविद्यालय आये तो पण्डित देवीप्रसाद से जो उनके अध्यापक रह चुके थे, मिले तो उन्होंने पूछा कि क्या वे उन्हें पहचानते हैं। उन्होंने कहा क्यों नहीं फिर कहा कि उन्हें इसलिये उनकी याद है कि प्रश्न बहुत किया करते थे। एक प्रश्न जो उन्होंने पूछा था जिसका समाधान वे अब तक भी नहीं ढूंढ पाये थे, श्री विद्यासागर जी का प्रश्न था — धातुओं के गणों के नाम मूल धातु से किये जाते हैं — भ्वादिगण (भू + आदि), अदादिगण (अद् + आदि), दिवादिगण (दिव् + आदि)। क्या कारण है कि जुहोत्यादिगण को बनाने हेतु जुहोति से लिया गया है। यहां भी ह्वादिगण होना चाहिये था। श्री विद्यासागर जी ने कहा कि तब मैंने इसका समाधान यही किया कि सूत्रकार ने सूत्र रचना को महत्त्व दिया है।

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आचार्यः डाउरेल उपेन्द्रम् (2) स्वामि प्रतिलाभ आदि पर इस समाधान से उन्हें स्वयं सन्तोष नहीं है।

श्री विश्वनाथ(?) जी ने बताया था कि उन्होंने कामसूत्र पर अनुसन्धान किया है। कभी इसी विषय पर उनकी पीएच.डी. करने की इच्छा थी। बातचीत में उन्होंने बताया कि कामसूत्र में पुरुषों और महिलाओं के लिये अलग-अलग ऋतुओं का उल्लेख है तथा बताया गया है कि उन ऋतुओं में अलग-अलग तरह के पुष्प लगाने चाहिएं। किन्तु अनेक स्थानों पर लेखक ने स्वयं अपनी उक्तियों के लिये लिट् लकार का प्रयोग किया है। लिट् परोक्ष में होता है। अतः उसके औचित्य के विषय में सन्देह होना स्वाभाविक है। एक विद्वान् से जब उन्होंने इस विषय में परामर्श किया तो उसने कुछ परोक्ष का एक अलग ही अर्थ प्रस्तुत किया - बुद्धयपकर्षान्तरितं परोक्षम्। इस व्याख्या के आधार पर लिट् प्रयोग के औचित्य का निर्वाह हो गया।

बातचीत चल ही रही थी कि श्री विश्वनाथ(?) जी की धर्मपत्नी भी आ गईं।

इस दम्पती से मिल तथा उन से बातचीत में अनेक गूढ़ विषयों की जानकारी प्राप्त कर मन बहुत प्रसन्न हुआ।

11 बजे पूर्वाह्न में महाविद्यालय में वेद सम्मेलन का आयोजन था। उसकी अध्यक्षता मुझे करनी थी। उसमें अनेक वक्ताओं में नालन्दा(?) के मू० पू० सरकार के डिप्टी सेक्रेटरी श्री विद्यारत्न जी ने भी भाषण दिया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि 'डा० सत्यव्रत जी को देखने की मुझे उत्कट इच्छा थी। मैं सोचता था कि मैं उन्हें ऊपर जाने से पूर्व देख भी पाऊंगा भी या नहीं। आज उन्हें देखकर मेरी इच्छा पूर्ण हुई है।' 75 वर्षीय इस वृद्ध महापुरुष के वचनों ने मुझे कहीं गहरे तक छू लिया। धर्मपत्नी जो महिलाओं में बैठी थीं अपने आवेग को रोक न पाईं। उनकी आंखें भर आईं। मुझे नहीं मालूम था कि लोग मुझे इतना चाहते हैं, उनके मन में मेरे लिये इतना आदर है।

दोपहर तीन बजे अपराह्न का सत्र प्रारम्भ हुआ। इसमें शिक्षा सम्मेलन था जिसमें मुख्यातिथ्य मुझे करना था। इसी में ही मुझे ... की महाविद्यालय की स्वर्ण(?) सम्मान उपाधि दी गई। उपरान्त मेरा परिचय

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देने के बाद उपाधि-पत्र पढ़ा गया। तदनन्तर मुझे शाल भेंट किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति डा० धर्मपाल तथा उपकुलपति डा० वेद प्रकाश शास्त्री भी उपस्थित थे। शाल ओढ़ाने के लिये डा० धर्मपाल जी भी आगे आये। मुझे बहुत अच्छा लगा। अन्त में गङ्गाजल का एक अतिसुन्दर नक्काशीदार कमण्डलु भी मुझे भेंट किया गया। तत्पश्चात् मेरा भाषण हुआ जिसमें मैंने भारतीय शिक्षा पद्धति पर देश के पर्यायवाची शब्दों के तथा गुरु, आचार्य, उपाध्याय आदि के पर्यायवाची शब्दों के आधार पर प्रकाश डाला।

पूर्व-सत्र में मैंने समय अधिक हो जाने पर वेद के विषय में कुछ विशेष नहीं कहा था। इस पर आज समापन पर श्री विद्यासागर ने टिप्पणी की थी - आपसे कुछ आशा थी वह नहीं रही। उसकी भरपाई मैंने इस सत्र में कर दी। मैंने उस सत्र में कुछ सामान्य बातें ही कहीं थीं। मैंने बताया था कि मेरा महाविद्यालय से बहुत पुराना सम्बन्ध है। मध्यमा परीक्षा मैंने दी थी। 1949 की बात है। केन्द्र महाविद्यालय ज्वालापुर में अपनी माता जी के साथ यहां आया था और लगभग एक महीना यहां रहा था। तब पं० विश्वनाथ शास्त्री यहां
मसूर। होते थे। उनका तथा उनके परिवार का स्नेह मुझे मिला था जिसकी मधुर स्मृति मेरे मन में बसी है। तब महाविद्यालय में अरहुल (समेट) के बहुत से पेड़ थे। वे बड़े-बड़े लाल-लाल फूलों से लदे होते थे। पहले बार उनके नीचे की डंडी की सब्जी मैंने यहां खाई थी। बाद में माता जी अक्सर वह सब्जी बनाती थीं।

भाषण के उपरान्त हम - मैं, श्रीमती तथा श्री रामकृष्ण शर्मा आयुष्मान् कनीत श्री किरनपाल जयन्त संस्थापक गुरुकुल महाविद्यालय, कण्वाश्रम एवं उनके दो शिष्यों के साथ हर की पौड़ी की ओर चल दिये। पौने सात बजे वहां परमार्थ निकेतन में गङ्गा की आरती होती है। हमारा इरादा था कि हम आरती से पहले वहां पहुंच जायें। श्री जयन्त ही वैन ड्राइव कर रहे थे। उन्हीं के प्रयास से हम 7.00 बजे सन्ध्या के परमार्थ निकेतन पहुंच गये। आरती अभी आरम्भ ही हुई थी। ठीक समय पर हम उसमें शामिल हो गये। हमारे लिये विशेष Seating [illegible] अनेक दर्शकों के बीच

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो हमारे सामने रखे हुए थे। उन्हें जलाया जाता था। भजन हुए। सामने गङ्गा में शङ्कर की मूर्ति थी जिस पर लाइटें डाली गई थीं। पाईप से गङ्गा की धारा थी, फिर कङ्कड़ों की जटाएँ बनाई थीं जिससे शङ्कर की मूर्ति थी, उसके आगे विशाल जल-समूह था। एक अद्भुत दृश्य था। सामने पहाड़ी थी। उसपर बने मकानों की रोशनियां एक अजीब समां उत्पन्न कर रही थीं। परमार्थ निकेतन के घाट और चबूतरों पर लोगों की भीड़ जुटी थी। सभी आरती में मग्न थे। आरती समाप्त होने पर हम अपने अपने कमरों में आ गये। श्री जयमल्ल जी ने हमारे लिये सब तरह का प्रबन्ध कर रखा था। भोजन से पूर्व हम निकेतन के स्वामी जी श्री चिदानन्द जी से भी मिले। उन्होंने कहा कि उन्होंने मेरे विषय में सुन रखा है। कनाडा में श्री मारकण्डेय जी ने उन से मेरे विषय में उनसे चर्चा की थी। इंग्लैण्ड में श्री सोमेश्वर जी ने मेरे विषय में बात की थी। डा० विद्यानिवास मिश्र भी आये थे उनसे मिले थे। उनसे भी मेरी बात चली थी। यह सब जानकर मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने स्वामी जी को अपना परिचय दिया। थाईलैण्ड में जो कार्य मैंने किया था उसकी जानकारी उन्हें दी। उन्होंने कहा कि एक सदी में थाईलैण्ड के हिन्दू मन्दिरों पर Encyclopaedia of Hinduism बन रहा है। उन्होंने कहा कि वे मुझसे इस विषय पर लिखवायेंगे।

भोजन हुआ और हम अपने-अपने कमरों में आकर विश्राम करने लगे। दिन भर के थके थे। नींद अच्छी आई।

11. 4.1999

प्रातः काल हम कुछ समय के लिये नदी की ओर गये। रास्ते में बीच के झाड़ों में कुछ पत्थर में बनी पौराणिक दृश्यों की झांकियां भी देखीं।

पूर्व दिन, 10.4.1999 को जैसे ही मैं महाविद्यालय भोजनालय से बाहर आया, एक आदमी मेरी ओर बढ़ा और कहने लगा कि मैंने कुछ पुस्तकें लिखी हैं। लाओस कैसे पहुँचा जा सकता है इस शीर्षक की उसकी पुस्तिका ने मेरा विशेष ध्यान आकर्षित किया। उसने वे पुस्तकें मुझे भेंट कीं और कहा कि वह ... अरब देश में रहना चाहता है। मेरे यह कहने पर कि हम नेपाल थाईलैण्ड जा रहे हैं, उसने आग्रह पूर्वक हम सभी को

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपने घर आने का निमन्त्रण दिया। उसका लोभ छोड़ना कठिन था कि परमार्थ निकेतन में रात्रि शयन न कर हम वहां आरती देख कर सीधे उसी के घर आ जायें और रात्रि विश्राम उन्हीं के यहां करें। देखें क्या कार्यक्रम बनता है यह कह कर हमने उससे विदा ली। उसने अपना नाम ओम् प्रकाश अग्रवाल बताया और ऋषीकेश का अपना पता भी दिया।

11.4.1997 को श्री विश्वपाल जयन्त को दोपहर तक गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर पहुंचना आवश्यक था। उस दिन अपराह्न में दो कार्यक्रम थे — एक आयुर्वेद सम्मेलन और दूसरा व्यायाम प्रदर्शन। उन दोनों में ही उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। यह सोचा गया कि पहले श्री ओम् प्रकाश अग्रवाल के अनुरोध को देखते हुए पहले उनके घर चला जाय फिर वहां से गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर। तदनुसार हम श्री अग्रवाल के घर की ओर चल दिये। यद्यपि वह ऋषीकेश में ही था पर परमार्थ निकेतन से काफी दूर था। पहाड़ी घुमावदार रास्ते पर कार चलती जा रही थी। रास्ते में किनारे पर — कहीं सड़क के बीचों बीच भी बहुत से बन्दर दिखाई दे रहे थे। श्री विश्वपाल जयन्त स्वयं गाड़ी चला रहे थे। मैं उनकी बगल की सीट पर था। बन्दरों को देख उन्होंने एक प्रसङ्ग सुनाया जो बहुत मार्मिक था। यह प्रसङ्ग उन्होंने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के भूतपूर्व आचार्य डा० लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी से सुना था।

एक बार डा० चतुर्वेदी एक साधु बाबा के साथ जंगल में जा रहे थे। साधु बाबा ने देखा कि एक बन्दर को एक सांप ने लपेट लिया है। वो बन्दर चीखने लगा। उसकी चीखें सुन जंगल के बहुत से बन्दर वहां इकट्ठे हो गये और चीखने लगे। साधु बाबा ने बन्दर को सांप के पाश से मुक्त कराने की इच्छा से एक ~~लकड़ी~~ टहनी ली, उसके अगले हिस्से में आग लगा दी और उसे सांप की पूंछ से छुआ दिया। उसके छुआने से सांप की पकड़ ढीली पड़ी और बन्दर कूद कर भाग निकला। जब साधु बाबा और डा० चतुर्वेदी चलने को हुए तो इकट्ठे हुए बन्दरों ने उन्हें रुकने के लिये इशारा किया। बन्दर जंगल में गये और ढेर सारे फल लाकर साधु बाबा को अर्पित किये। इस तरह तिर्यग्योनि के बन्दरों ने अपने एक साथी की जान बचाने के लिये कृतज्ञता प्रकट की। काश! मानव जाति में भी इस प्रकार की कृतज्ञता होती।

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी प्रसङ्ग को सुनते-सुनाते हम श्री ओम प्रकाश अग्रवाल के घर पहुंच गये। उन्होंने फल और दूध और चाय से हमारा आतिथ्य किया, घर दिखाया। पहले तल्ले पर उन्होंने एक बड़ा सा कमरा बनवाया हुआ है जिस के साथ शौचालय तथा स्नानागार भी है। यह वे बिना किसी किराये के सार्वजनिक कार्यों जैसे कीर्तन-सत्सङ्ग आदि के लिये लोगों को दे देते हैं। अग्रवाल दम्पती अकेले ही अपनी कोठी में रहते हैं। बच्चे उनके अपने-अपने परिवारों के साथ दिल्ली में हैं। अग्रवाल जी केवल पांचवीं कक्षा तक पढ़े हैं पर, जैसा कि उन का स्वयं का कहना है, वे गुरु हैं। इसी कारण वे लेखन कार्य कर रहे हैं। उन्होंने अपनी कुछ और पुस्तिकाएं भी हमें दीं।

उनके यहां से उन के उस नये स्थान को भी देखने गये जहां से गङ्गा सामने ही दीखती है। उस के पार के तट पर हाथी आदि जंगली जानवर अक्सर पानी पीने आया करते हैं।

समय बहुत हो रहा था। श्री अग्रवाल जी से विदा ले हम मध्याह्न के लगभग गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर पहुंच गये। वहां रास्ते में ही आचार्य डा० हरिगोपाल शास्त्री मिल गये। वे हमें उसी कमरे में ले गये जहां पूर्व दिन रुके थे। उस समय उस कमरे के बेड पर एक वृद्ध सज्जन विश्राम कर रहे थे। डा० हरिगोपाल शास्त्री ने हमारा परिचय उन से कराया और कहा कि वे लगभग सौ वर्ष के हैं और महाविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक हैं। वे आयुर्वेद सम्मेलन में उद्घाटन भाषण देने वाले हैं। डा० हरिगोपाल शास्त्री के परिचय कराने के बाद चले जाने पर हमारी उन वृद्ध वैद्य से बातचीत होने लगी। उन्होंने बताया कि वे इस 30 अप्रैल से सौवें वर्ष में प्रवेश करने वाले हैं। इतना वृद्ध होने पर भी उनके चश्मा नहीं लगता है, कमर उन की सीधी है, श्रवणशक्ति अक्षुण्ण है। उन से मिलना हमें बहुत अच्छा लगा। सौ साल के व्यक्ति के दर्शन को ही भारतीय परम्परा में बहुत शुभ माना गया है।

वैद्य जी ने अपना नाम हरिप्रसाद शास्त्री बताया। वे मुरादाबाद में रहते हैं। केवल असाध्य रोगों की चिकित्सा ही करते हैं। उसी से ही कई हजार की आमदनी हो जाती है। हमने अपने-अपने रोगों - बार-बार पेशाब जाना तथा घुटने के दर्द की उन से चर्चा की। उन्होंने औषध बता दी जो हमने लिख ली।

इसके बाद कुछ भोजन और कुछ विश्राम के लिये प्रस्थान। श्री किशन लाल गोयन्त को मन्त्री तथा आचार्य जी ने

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महाविद्यालय में हो रहे लियां। आयुर्वेद सम्मेलन, व्याख्यान दर्शन तथा रात्रि को कवि सम्मेलन के समय उनकी उपस्थिति को उन्होंने आकर्षण बताया। अपने दो शिष्यों को उन्होंने हमारे साथ कर दिया और हम कण्वाश्रम के लिये चल रहे।

चलने से पूर्व विचार-विमर्श के लिये जो समय लगा था उसी में दो वृद्ध व्यक्ति हमारी वैन के पास खड़े हो गये और अनेक विषयों पर हम से चर्चा करने लगे। मैं ड्राइवर के पास वाली सीट पर बैठा था। वे बाहर उसी ओर खड़े थे। उन्होंने अपना नाम सत्यपाल शास्त्री बताया। महाविद्यालय के वे स्नातक थे और वहां से 25 मील दूर देहात में रहते थे। सम्प्रति खेती-बाड़ी ही उनका काम था। बातचीत में उन्होंने बताया कि श्वित्र का एक बहुत ही प्रभावी इलाज है और वह है नीम की बक्कल (=वल्कल, छाल) को पीस कर तथा कपड़छान कर तीन-तीन माशे दिन में तीन बार लेना। बवासीर (खूनी) के लिये उन्होंने बताया कि पं० देवीप्रसाद जी कहते थे और वे मधुमक्खियों के छत्ते को गर्म कर उस पर बैठा करते थे जिससे उन्हें लाभ होता था।

कण्वाश्रम की ओर प्रस्थान करने से पूर्व मेरी मेरे बचपन के साथी श्री रणजीत सिंह से भी भेंट हुई। शरीर उनका बहुत शिथिल हो गया है। सारे शरीर पर खाज हो रहा है। हृदय रोग भी हो गया है। बीच में तो स्थिति यह हो गई थी कि डाक्टरों ने कह दिया था कि अब चिकित्सा निरर्थक है। उनके पुत्र अरविन्द ने जब उन्हें कहा था कि मैं डाक्टर हूं। मैं नहीं चाहता कि उन्हें बिना चिकित्सा के ही रहने दिया जाय। आप प्रयत्न कीजिये। उन्होंने प्रयत्न किया। वे बच गये। रणजीत जी बोले शायद मैं इसलिये बच गया कि मुझे आप से मिलना था। निमन्त्रण उन्हें नहीं था, मैं आ रहा हूं यही जान के चले आये थे। हम दोनों प्रगाढ़ आलिङ्गन में कुछ समय आबद्ध रहे। हम दोनों ही अत्यन्त भावुक हो उठे थे। उन्होंने याद दिलाया कि कैसे बचपन में हम भुने चने झोली में भर खाया करते थे। कितने सुहाने थे वे दिन! समय कैसे बीत जाता है।

कण्वाश्रम ज्वालापुर से 55 कि.मी. दूर है। शाम को छः बजे के लगभग हम वहां पहुंच गये। कुछ विश्राम कर हम मालिनी नदी को देखने गये और उसके पास की पहाड़ी की चोटी को जहां एक सराय सी बनी है और जो शायद मूल आश्रम भूमि है। नदी क्या है, एक पतली सी जल धारा है। बरसात में कहते हैं वह वृहदाकार धारण कर लेती है। उसके पार खुदाई में अनेक मूर्तियां तथा प्राचीन अवशेष मिले हैं।

12. 5. 1999.

रात कण्वाश्रम में बिता हम दूसरे दिन ... श्री जयन्त जी को

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साथ ही अनिर्धन निकेतन हरिद्वार में पहुँच गये जहाँ मेरे बाल सखा स्वामी कैलाशानन्द जी ने आवास आदि की व्यवस्था कर रखी थी। और जहां अगले दिन पहली जनवरी के उपलक्ष्य में मेरा अभिनन्दन था।

संस्कृतप्राध्यापक

कण्वाश्रम में हमारी भेंट कोटद्वार में गवर्नमेंट कालेज के ... से भी हुई। कालिदास की कृतियों के अंश वे बहुत उद्धृत करते थे। कालिदास उन्हें बहुत स्मरण था। इन्दुमती पर उन्होंने बहुत शोध किया है। उसके पर्याय वाची शब्दों की सूची ... के अनुरोध पर तैयार कर दी। उनका कहना है कि इन्दुमती का ... उनके पास है। उन्होंने उसकी कुछ मात्रा हमें देने का वचन भी किया था जो उन्होंने पूरा नहीं किया। शायद उसे पुस्तकाकार प्रकाशन पर लगाना होगा।

कण्वाश्रम में ब्रह्मचारियों की अनुशासन बद्ध जीवन चर्या देखी। पंक्तिबद्ध हो कर यज्ञशाला में तथा भोजनालय में जाना, गुरुकुल के हर काम में हाथ बटाना। यह सब शहरी छात्रों के लिये अनुकरणीय है।

आश्रम की फार्मेसी भी देखी। औषध कैसे बनाती हैं इसकी बहुत सी नई जानकारी मिली।

कण्वाश्रम से हम वृद्ध ग्राम के नाम से प्रसिद्ध महर्षि कण्व संस्कृत विद्यालय में भी गये। वहां प्राचार्य श्रीमथुरा-प्रसाद देवरानी से मिले। संस्थापक कोठारी जी के परिवार की एक महिला भी हमें मिलने के लिये विद्यालय में उपस्थित थीं। विद्यालय में कुल सत्रह विद्यार्थी हैं। उन्होंने वेदमन्त्र, संस्कृत पद्य तथा संस्कृत भाषण आदि हमारे सामने प्रस्तुत किये। जिनका भी बहुत प्रबुद्ध लगे।

प्र.कृ.ज

विद्यालय ~~में~~ अत्यन्त पर्याप्त विस्तृत है। अतिथिशाला, छात्रावास, पाठशाला भवन आदि उसमें बने हैं। उनका ठीक से उपयोग नहीं हो रहा है। एक आधुनिक स्कूल भी उसमें चलता है। प्राचार्य निष्ठावान हैं उसके प्रति भावशाली छात्रों को संस्कृत की ओर प्रवृत्त कराने का उनका प्रयास रहता है। लगभग 20 मिनट मैंने वहां ओजस्वी उद्बोधन प्रस्तुत किया।

13.4.1999

प्रातः 11 बजे मेरा अभिनन्दन समारोह आरम्भ हुआ। अध्यक्षता के लिये सभा संयोजक श्री ब्रह्मानन्द बिजल्वाण ने श्री जितपाल भगत को अनुरोध किया। भाषण कर्ताओं में विद्यालय संस्थापिका ~~कु~~ सुश्री सत्या सच्चदेव, श्री रामकृष्ण शर्मा, (इन्होंने मेरा कार्य विवरण दिया), श्रीमती उषा सत्यव्रत, त्रिपाठी, ~~अरुणि कैलाशानन्द जी~~ जो मेरा भी भाषण ... तथा ... ने मुझे मेरे लिये।

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभिनन्दन पत्र सुश्री सतीश कुमारी ने पढ़ा। तदनन्तर

श्री राम कृपालु त्रिपाठी (2) तथा
आचार्य ब्रह्मानन्द जी के भाषण हुए। मैंने आभार व्यक्त किया।
धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय के एक पण्डित ने किया।

इस अवसर महर्षि संस्कृत महाविद्यालय के बाहर के अनेक विद्वान् भी उपस्थित थे। इनमें विशेष उल्लेखनीय थे रामानुज संस्कृत महाविद्यालय के आचार्य श्री ओम् प्रकाश भट्ट, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के आचार्य डा० हरिगोपाल शास्त्री तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० वेदप्रकाश शास्त्री।

शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

महर्षि जी ने अपने भाषण में मेरी सौम्यता का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने मेरे स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता भी व्यक्त की। उन्होंने बताया कि बचपन में मैं कितना [illegible] था – सुन्दर गोल चेहरा।

विषय में कहा कि मैंने / मैंने अपने भाषण में महर्षि जी के [illegible] लिखा है। लिखा था '[illegible] खलु' के रूप में [illegible] भी मैंने प्रस्तुत किया। महर्षि और महात्मा का अन्तर प्रस्तुत करते हुए मैंने कहा कि वे महर्षि भी हैं और महात्मा भी। अन्त में मैंने महर्षि महाविद्यालय की सतत उन्नति एवं प्रगति के लिये अपनी शुभ कामनाएं अर्पित कीं।

अपराह्न में भोजन और किञ्चित् विश्राम के बाद मैं और धर्मपत्नी शताब्दी एक्सप्रेस से दिल्ली के लिये चल दिये और रात के पौने ग्यारह बजे नई दिल्ली स्टेशन पहुंच गये। शरत् हमें लेने आया हुआ था। उसके साथ हम डिफेंस कालोनी गये। रात उसके यहाँ बिता हम प्रातः रूपनगर आ गये। इस तरह समाप्त हुआ हमारा हरिद्वार प्रवास जो अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण रहा।

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha